भारत – श्रीलंका संबंध

भारत और श्रीलंका के संबंध 2,500 वर्ष से अधिक समय पुराने हैं। दोनों देशों की बौद्धिक, सांस्कृतिक धार्मिक ओर परस्पर भाषाई संबंधों की एक विरासत है। हाल ही के वर्षों में, सभी स्तरों पर हमारे संबंधों में प्रगाढ़ता आई है। व्यापार और निवेश बढ़ा है तथा विकास, शिक्षा, संस्कृति और रक्षा के क्षेत्रों में सहयोग किया जाता है। दोनों देश अंतरराष्ट्रीय रूचि के प्रमुख मुद्दों पर व्यापक समझ रखते हैं। हाल के वर्षों में, आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों (आई डी पी) और श्रीलंका की जनसंख्या के वंचित वर्गों के लिए विकासात्मक सहायता परियोजनाओं के कार्यान्वयन में हुई महत्वपूर्ण प्रगति से दोनों देशों की मित्रता में और प्रगाढ़ता आई है।

श्रीलंकाई सेना और लिट्टे के बीच लगभग तीन दशक लंबा सैनिक संघर्ष मई, 2009 में समाप्त हुआ। इस सैनिक संघर्ष के दौरान, भारत ने आतंकवादियों के विरूद्ध श्रीलंका सरकार के अधिकार का समर्थन किया। इसी दौरान, अधिकांश तमिल सिविलियन जनसंख्या की दुर्दशा पर भी भारत ने गहरी चिंता व्यक्त की और इस बात पर बल दिया कि उनके अधिकार और कल्याण संबंधी मुद्दे, लिट्टे के खिलाफ युद्ध में उलझ कर न रह जाएं।

भारत ने उच्चतम स्तरों पर यह दोहराया है कि नृजातीय मुद्दे के राजनैतिक समझौते के माध्यम से राष्ट्रीय समाधान की जरूरत है। भारत हमेशा से बातचीत से ऐसे राजनैतिक समझौते के पक्ष में रहा है, जो संयुक्त श्रीलंका के ढांचे के भीतर सभी समुदायों को स्वीकार्य हो और लोकतंत्र, अनेकता तथा मानवाधिकारों के सम्मान के अनुकूल हो।

राजनीतिक संबंध

राष्ट्रपति मैत्रीपाल सिरिसेना को 8 जनवरी, 2015 को आयोजित राष्ट्रपति के चुनाव में श्रीलंका का नया राष्ट्रपति चुना गया था। वे पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे के बाद इस पद पर चुने गए। 17 अगस्त 2015 को संसदीय चुनाव के बाद 21 अगस्त 2015 को राष्ट्रपति सिरीसेना द्वारा श्री रानिल विक्रमसिंघे को प्रधानमंत्री के रूप में फिर से नियुक्त किया गया।

दोनों देशों के बीच राजनैतिक संबंध नियमित अंतरालों पर दोनों देशों के नेताओं की यात्राओं से मजबूत हुए हैं।

श्रीलंका से, राष्ट्रपति सिरीसेना ने भारत का चार दिवसीय दौरा किया जिसकी शुरूआत 15 फरवरी, 2015 से हुई। प्रधानमंत्री श्री रानिल विक्रमसिंघे ने सितंबर 2015 में भारत का दौरा किया जो प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त होने के बाद उनकी पहली विदेश यात्रा थी। प्रधानमंत्री सिरीसेना और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात सितंबर 2015 में न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 70वें सत्र के दौरान अतिरिक्त समय में और नवंबर 2015 में पेरिस में सी ओ पी21 बैठक में भी हुई थी। श्रीलंका के विदेश मंत्री मंगला समरवीरा ने जनवरी, 2015 में नई दिल्ली की पहली प्रथम समुद्रपारीय सरकारी यात्रा की। श्रीलंका की पूर्व राष्ट्रपति चंद्रिका भंडारनायके कुमारतुंगा ने विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित "संवाद - संघर्ष के परिहार तथा पर्यावरणीय जागरूकता पर वैश्विक हिंदू बौद्ध पहल" में भाग लेने के लिए सितंबर 2015 में नई दिल्ली का दौरा किया। श्रीलंका के एयर फोर्स कमांडर ने 27 से 31 जुलाई 2015 के दौरान भारत का दौरा किया। इससे पहले, श्रीलंका के नेवी कमांडर ने श्रीलंका के लिए निर्मित किए जा रहे द्वितीय आफशोर पेट्रोल वेजल की कील स्थापना समारोह में भाग लेने के लिए मई 2015 में गोवा का दौरा किया। रक्षा सचिव के स्तर पर सितंबर 2015 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरी वार्षिक रक्षा वार्ता के लिए श्रीलंका के रक्षा सचिव श्री करुणासेना हेटीआर्चची के नेतृत्व में श्रीलंका के एक शिष्टमंडल ने भारत का दौरा किया।

भारत की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 13 और 14 मार्च, 2015 को श्रीलंका का दौरा किया। वह अनुराधापुरा, तलाईमन्नार औरा जाफना भी गए। विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज प्रधानमंत्री की यात्रा के सिलसिले में तैयारी के लिए 6 और 7 मार्च, 2015 को श्रीलंका में थी। "ज्ञान अर्थव्यवस्था में ऊर्जा चुनौतियां" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा संगोष्ठी में भाग लेने के लिए पूर्व राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम ने 25 से 27 जून 2015 के दौरान श्रीलंका का दौरा किया। तत्कालीन विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद ने अक्टूबर और नवंबर, 2013 में श्रीलंका की यात्रा की। विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा सुराज ने अप्रैल, 2012 में लोक सभा में विपक्ष की नेता के रूप में श्रीलंका की यात्रा की और 12 सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया था। वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सम्मेलन 'गाले वार्ता' में भाग लेने के लिए नेवल स्टाफ चीफ एडमिरल आर के धवन ने 22 से 25 नवंबर 2015 के दौरान श्रीलंका का दौरा किया, जबकि आर्मी स्टाफ चीफ जनरल दलबीर सिंह सुहाग ने 29 नवंबर से 4 दिसंबर के दौरान श्रीलंका का दौरा किया। वाणिज्य सचिव स्तरीय बातचीत के तीसरे चक्र में भाग लेने के लिए वाणिज्य सचिव श्री राजीव खेर ने 4 मार्च, 2015 को श्रीलंका का दौरा किया।

वाणिज्यिक संबंध :

भारत से प्रत्यक्ष निवेश के लिए, श्रीलंका लंबे समय से प्राथमिकतापूर्ण गंतव्य रहा है। श्रीलंका सार्क देशों में भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है। भारत भी श्रीलंका का सबसे बड़ा वैश्विक व्यापारिक भागीदार है। विशेष रूप से मार्च 2000 में भारत - श्रीलंका मुक्त व्यापार करार के लागू होने के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार तेजी से बढ़ा है। श्रीलंकाई सीमा शुल्क के आंकड़ों के अनुसार, 2015 में 4.7 बिलियन अमेरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था। 2015 में भारत से श्रीलंका को निर्यात 4.1 मिलियन अमेरीकी डालर का हुआ (2.1 प्रतिशत की वृद्धि), जबकि श्रीलंका से भारत में आयात 645 मिलियन अमेरीकी डालर का हुआ था (3.2 प्रतिशत की वृद्धि)।

वर्ष 2003 से भारत 1 बिलियन अमेरीकी डालर से अधिक के संचयी निवेश के साथ श्रीलंका में सर्वोच्च चार निवेशकों में है। पेट्रोलियम रिटेल, सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं, रियल एस्टेट, दूरसंचार, अतिथि सत्कार और पर्यटन, बैंकिंग और खाद्य प्रसंस्करण (चाय और फलों का रस), धातु उद्योग, टायर, सीमेंट, ग्लास विनिर्माण और अवसंरचना विकास (रेलवे, विद्युत, जलापूर्ति) सहित विविध क्षेत्रों में भारत का निवेश है।

भारतीय कंपनियों से अनेक नए निवेश प्रक्रिया के अधीन या कार्यान्वयन के अधीन हैं। उनमें से उललेखनीय प्रस्ताव ये हैं – श्री रेणुका शुगर का हम्बंतोता में शुगर रिफाइनिंग प्लांट की स्थापना के लिए निवेश प्रस्ताव (220 मिलियन अमरीकी डालर), साउथ सिटी, कोलकाता का कोलम्बो में रियल एस्टेट विकास के लिए निवेश प्रस्ताव (400 मिलियन अमरीकी डालर), श्रीलंका के शहरी विकास प्राधिकरण के साथ टाटा हाउसिंग स्लेव आइलैंड विकास परियोजना का प्रस्ताव (430 मिलियन अमरीकी डालर), आई टी सी लिमिटेड की 'कोलंबो वन' परियोजना के लिए प्रस्ताव (आई टी सी ने 300 मिलियन अमरीकी डालर के निवेश की वचनबद्धता की है, इससे पूर्व 140 मिलियन अमेरीकी डालर की वचनबद्धता की गई थी)। डाबर ने मई, 2013 में एक फल रस विनिर्माण संयंत्र (17 मिलियन अमरीकी डालर) की स्थापना पहले से ही की हुई है।

दूसरी ओर, विगत कुछ वर्षों से भारत में श्रीलंकाई निवेश की बढ़ती प्रवृत्ति भी दिखाई दी है। उल्लेखनीय उदाहरणों में फ्रेट सर्विसिंग और लॉजिस्टिक सेक्टर में अन्य निवेशों के अलावा, ब्रैंडिक्स (विशाखापत्तनम में एक गारमेंट सिटी की स्थापना करने के लिए लगभग 1 बिलियन अमरीकी डालर), एम ए एस होल्डिंग्स, जोन कील्स, हेलेज और एतकेन स्पेंस (होटल्स) शामिल हैं।

विकासात्मक सहयोग

सशस्त्र संघर्ष के समाप्त होने के बाद, एक प्रमुख मानवीय चुनौती सामने आई और लगभग 300,000 तमिल नागरिकों को आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों (आई डी पी) के रूप में कैंपों में रखा गया था। भारत सरकार ने एक संतुलित कार्यक्रम के तहत आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों का सामान्य जीवन यथा शीध्र बहाल करने में मदद की और साथ ही लगातार इस बात का समर्थन किया कि उन्हें उनके मूल स्थानों पर यथा शीध्र पुन: बसाया जाए। आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों को भारत की तात्कालिक मानवीय सहायता में ये राहत कार्य शामिल हैं – 250,000 परिवारों के लिए राहत पैकेटों की आपूर्ति, एक आपातकालीन चिकित्सा इकाई की स्थापना जिसने 50,000 से अधिक आई डी पी का इलाज किया, एक मिलियन से ज्यादा रूफिंग शीटों की आपूर्ति, साथ ही अस्थायी आवास निर्माण के लिए सीमेंट की 400,000 बोरियों की आपूर्ति और कृषि उपकरणों के 95,000 स्टार्टर पैकों की व्यवस्था। भारत ने सैनिक संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में कृषि एवं आर्थिक गतिविधियां पुन: बहाल करने में भी मदद की।

जून, 2010 के दौरान श्रीलंका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान भारत की ओर से श्रीलंका को विकास सहायता में वृद्धि में मुख्य रूप से गति उस समय आई जब भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने श्रीलंका के लिए विकास पैकेज की घोषणा की थी। इस सहायता में 50,000 आवास इकाइयों का निर्माण, उत्तरी रेलवे लाइनों की बहाली, पोतावशेष हटाना और के के एस हार्बर की बहाली, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना, जाफना में सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना, सामपुर में 500 मेगावाट कोयला विद्युत संयंत्र की स्थापना, थिरूकेथीस्वरम मंदिर की बहाली, उत्तरी प्रांत में कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना, श्रीलंकाई विद्यार्थियों द्वारा भारत में उच्चतर अध्ययन करने के लिए उनके छात्रवृत्ति कार्यक्रम में विस्तार करना, अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण हेतु केंद्रों की स्थापना और त्रिभाषी श्रीलंका के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना के वास्ते तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल है।

आवासीय परियोजना, श्रीलंका को भारत सरकार की सहायता वाली एक मुख्य परियोजना है, जिसमें अनुदान स्वरूप 1372 करोड़ रूपए से अधिक की समग्र प्रतिबद्धता शामिल है। कदाचित यह भारत सरकार द्वारा हाथ में ली गई सबसे बड़ी विदेशी परियोजना है। उत्तरी प्रांत में 1,000 घरों के निर्माण का प्रथम चरण जुलाई, 2012 में पूरा हो गया था। उत्तरी एवं पूर्वी प्रांतों में 45,000 घरों के निर्माण अथवा मरम्मत का दूसरा चरण एक 'अभिनव ओनर-ड्रिवन माडल' के तहत कार्यान्वित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत मालिक-लाभार्थी अपने घरों का निर्माण / मरम्मत स्वयं करते हैं और भारत सरकार उन्हें तकनीकी एवं वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यह चरण 2 अक्टूबर, 2012 को महात्मा गांधी जी के जन्म दिवस पर शुरू किया गया था और लांच होने से लेकर अब तक उत्कृष्ट प्रगति हुई है। 31 दिसंबर 2015 तक की स्थिति के अनुसार कुल 43,800 मकानों का निर्माण पूरा हो गया है। 2015 के दौरान उत्तरी प्रांत में 13,827 नए मकान निर्मित किए गए और पूर्वी प्रांत में 2051 नए मकान निर्मित किए गए। इसके अलावा उत्तरी प्रांत में 502 क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत की गई। उत्तरी एवं पूर्वी प्रांतों में केवल 2200 मकानों का निर्माण या मरम्मत शेष है, जिसके अगले कुछ महीनों के दौरान पूरे हो जाने की उम्मीद है। नवाचारी समुदाय आधारित पहल के माध्यम से मध्य एवं उवा प्रांतों में 4000 मकानों का निर्माण करने के लिए तीसरा चरण बहुत शीघ्र शुरू किया जाएगा।

श्रीलंका, भारत सरकार द्वारा दिए गए विकास ऋण के प्राप्तकर्ताओं में से एक प्रमुख ऋण प्राप्तकर्ता है। 167.4 मिलियन अमेरीकी डालर के ऋण से टीसुनामी क्षतिग्रस्त कोलोम्बो – मटारा रेल लिंक की मरम्मत करके उसे अपग्रेड किया गया है। 800 मिलियन अमेरीकी डालर की एक अन्य ऋण राशि रेल लाइन बिछाने और रॉलिंग स्टाक की आपूर्ति के लिए दी गई है ताकि मेडावछिया से मधु, मधु से तलैमन्नार, ओमनथाइ से पल्लै, पल्लै से कंकेसनथुरई रेलवे लाइनों के निर्माण में और पहले से ही कार्यात्मक उत्तरी श्रीलंका में

सिगनलिंग एवं दूरसंचार प्रणालियां स्थापित करने में सहायता दी जा सके। अक्टूबर, 2014 में, पल्लै – जाफना निर्मित रेल मार्ग और सिंगनल सिस्टम का उद्घाटन किया गया था, जिससे जाफना और कोलंबो रेल मार्ग से पुन:जुड़ गए। भारत अपनी अनुदान निधि के माध्यम से श्रीलंका के कई भागों में शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन संपर्कता, छोटे एवं मझौले उद्यम विकास और प्रशिक्षण जैसे क्षेत्रों में अनेकानेक छोटी विकास परियोजनाओं में श्रीलंका को सतत रूप से सहायता देता रहता है।

सांस्कृतिक संबंध :

29 नवंबर, 1977 को नई दिल्ली में भारत सरकार और श्रीलंका सरकार द्वारा सांस्कृतिक सहयोग करार पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह करार दोनों देशों के बीच आवधिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान का आधार बना हुआ है। कोलंबो स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा करने में सक्रिय भूमिका निभाता है। पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए भारतीय उच्चायोग ने 21 जून 2015 को आयकॉनिक समुद्री स्थल गाले फेस ग्रीन में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में दो हजार योग प्रेमियों ने भाग लिया। यह केंद्र भारतीय संगीत, नृत्य, हिंदी और योग की कक्षाएं संचालित करता है। श्रीलंका की अपनी यात्रा के दौरान भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई घोषणा के अनुसरण में नवंबर 2015 में श्रीलंका में भारत महोत्सव आरंभ किया गया, जिसके दौरान भारत के विभिन्न भागों से नृत्य रूप का प्रदर्शन कोलंबो, कैंडी और गाले में किया गया, जो बहुत शानदार नृत्य मिश्रण है। महोत्सव का विषय "संगम" अर्थात भारत एवं श्रीलंका की संस्कृतियों का संगम है।

भारत और श्रीलंका ने संयुक्त गतिविधियों के माध्यम से भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति का 2600वां स्मरणोत्सव वर्ष (संबुद्धत्व जयंती) मनाया। इन गतिविधियों में, अगस्त –सितम्बर, 2012 में श्रीलंका में आयोजित पावन कपिलवस्तु स्मृतिचिह्नों की प्रदर्शनी भी शामिल है। इस प्रदर्शनी के दौरान, लगभग 3 मिलियन श्रीलंका वासियों (श्रीलंका की कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत) ने इन पावन स्मृति चिह्नों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। अंतरराष्ट्रीय बुद्धिस्ट संग्राहलय स्थित भारतीय गैलरी, श्री डालडा मालीगवा, का उद्घाटान दिसम्बर, 2013 में हुआ था। इस गैलरी में सांझी विरासत और भारत एवं श्रीलंका के बीच घनिष्ठ बुद्धिस्ट संबंधों को उजागर किया गया है। दोनों सरकारों ने संयुक्त रूप से 2014 में अनगरिका धरमपाला की 150वीं वर्षगांठ मनाई थी।

भारत –श्रीलंका प्रतिष्ठान की स्थापना अंत:सरकारी पहल कार्य के रूप में दिसंबर,1998 को हुई थी। इसका उद्देश्य भी सिविल सोसाइटी के परस्पर आदान-प्रदानों के माध्यम से वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षिक और सांस्कृतिक सहयोग में वृद्धि करना तथा दोनों देशों की नौजवान पीढ़ी के बीच संपर्क बढ़ाना है।

शिक्षा, सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत इस समय श्रीलंकाई विद्यार्थियों को वार्षिक रूप से करीब 290 छात्रवृत्ति स्लाटों की पेशकश कर रहा है। इसके अलावा, भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग योजना और कोलंबो योजना के तहत, भारत श्रीलंकाई राष्ट्र को वार्षिक रूप से लगभग 200 स्लाटों की पेशकश कर रहा है।

पर्यटन, भारत और श्रीलंका के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत सरकार ने 14 अप्रैल 2015 को श्रीलंका के पर्यटकों के लिए औपचारिक रूप से ई-टूरिस्ट वीजा स्कीम की शुरूआत की। इसके बाद सद्भाव प्रदर्शन के रूप में ई पर्यटन वीजा के लिए शुल्क में भारी कटौती की गई। श्रीलंका के नागरिकों के लिए ई पर्यटन वीजा के लिए शुल्क मात्र 25 अमरीकी डालर (प्लस 2.5 प्रतिशत बैंक प्रभार) है, जबकि पहले 60 अमरीकी डालर (प्लस 2 अमरीकी डालर बैंक शुल्क) प्रभारित किया जाता था। वर्ष 2015 में, कुल पर्यटकों में से 3,16,247 पर्यटक भारत से आए थे जो श्रीलंका आने वाले कुल पर्यटकों की संख्या का 17.58 प्रतिशत बनता है। श्रीलंकाई पर्यटक भी भारतीय पर्यटन बाजार के लिए सर्वोच्च दस स्रोतों में से एक स्रोत है। वर्ष

2014 में, भारत और श्रीलंका के बीच यात्रा सुविधाजनक बनाने के लिए श्रीलंका में उच्चायोग एवं अन्य पदधारियों द्वारा लगभग 200,000 वीजा जारी किए गए थे।

मछुवारों से संबंधित मुद्दा

दोनों देशों की समुद्री सीमा के भीतर, विशेषत: पाल्क स्ट्रेट्स और मन्नार की खाड़ी में, मछुवारों के भ्रमण की घटनाएं सामान्य बात है। किंतु दोनों देश अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा लाइन पार करने वाले दोनों देशों में से किसी देश के वास्तविक मछुवारों के मुद्दे का समाधान करने के लिए कतिपय व्यावहारिक प्रबंध-व्यवस्था करने पर राजी हुए हैं। किंतु दोनों देश अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा लाइन पार करने वाले दोनों देशों में से किसी देश के वास्तविक मछुवारों के मुद्दे का समाधान करने के लिए कतिपय व्यावहारिक प्रबंध-व्यवस्था करने पर राजी हुए हैं।

भारतीय समुदाय

भारतीय मूल के लोगों (पी आई ओ) में सिंधी, बोरा, गुजराती, मेमोन, पारसी, मलयाली और तमिल भाषी व्यक्ति शामिल हैं, जो श्रीलंका में बस गए हैं (अधिकांशत: विभाजन के बाद) और वे विभिन्न व्यावसायिक उद्यमों में संलग्न हैं। हालांकि उनकी संख्या (लगभग 10,000) काफी कम है, फिर भी वे आर्थिक रूप से समृद्ध और बहुत अच्छी स्थिति में हैं। प्रत्येक समुदाय के अपने-अपने संगठन हैं जो त्यौहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। गैर-सरकारी आंकड़ों के अनुसार, यह अनुमान है कि लगभग 14,000 भारतीय प्रवासी श्रीलंका में रहते हैं।

भारतीय मूल के तमिल केंद्रीय, उवा और साब्रागमुवा प्रांतों में चाय या रबड़ के बागानों में काम करते हैं, हालांकि पिछले दशक से युवा पीढ़ी रोजगार की तलाश में कोलंबो में प्रवासित हो रही है । कोलंबो में रह रहे भारतीय मूल के तमिलों में से काफी लोग व्यापार करते हैं। सरकारी जनगणना के आंकड़ों (2011) के अनुसार, भारतीय मूल के तमिल नागरिकों की संख्या करीब 1.6 मिलियन है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय उच्चायोग की वेबसाइट, कोलंबो:
http://www.hcicolombo.org/

भारतीय उच्चायोग, कोलंबो फेसबुक लिंक:https://www.facebook.com/hcicolombo

भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो फेसबुक लिंक :https://www.facebook.com/indianculturalcentre

यूट्यूब लिंक शीर्षक **"**भारत और श्रीलंका **:** नया सवेरा**,** नई आशा" New Dawn, New Hopes**"**
https://www.youtube.com/watch?v=l32D_0FKdes

ट्विटर :
https://twitter.com/IndiainSL

***

जनवरी, 2016